समाजशास्त्र की परिभाषा (Definition of Sociology)

इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ में आज संसार के समक्ष भविष्य के अनेक प्रश्न और प्रतिबद्धताएं हैं, जिनको बुनियादी सरोकार मानव समाज को और अधिक व्यापक-दायित्वपूर्ण, संवेदनशील और मनुष्य जाति के प्रति गहरी संबद्धता से परिपूर्ण करना है। हजारों परिवर्तनों की पृष्ठभूमि में अनेक सभ्यताओं का उत्थान और पतन इतिहास में दर्ज है। सारे संसार में अनेक प्रकार के परिवर्तन अनवरत हो रहे हैं। समाजशास्त्रियों ने अनेक गंभीर **अंतर्विरोधों,** तनावों, दबावों और सामाजिक विभाजनों को रेखांकित किया है। आधुनिक टेक्नालॉजी ने जिस प्रकार प्राकृतिक पर्यावरण पर दुष्प्रभाव छोड़ा है वह भी समाज और सभ्यता के भारी परिवर्तन का लक्षण है। फिर भी हम आज अपने भाग्य को नियंत्रित करने और अपने जीवन को बेहतर बनाने की संभावनाओं से परिपूर्ण हैं। यह सब प्राचीन पीढ़ियों के लिए अकल्पनीय था।

यह संसार किस प्रकार अस्तित्व में आया? हमारा जीवन हमारे पूर्वजों के जीवन से किस प्रकार भिन्न है और भविष्य में किस प्रकार के परिवर्तन होंगे? ये सभी प्रश्न मुख्य रूप से समाजशास्त्र से जुड़े हैं। वस्तुतः समाजशास्त्र इन प्रश्नों से संबद्ध अध्ययन का आधार क्षेत्र है।

समाजशास्त्र समाजों, समूहों और मनुष्य के सामाजिक जीवन का अध्ययन है। यह हमारे सामाजिक व्यवहारों से जुड़े मसलों पर अत्यधिक प्रभावशाली तरीके से विमर्श करता है। समाजशास्त्रीय अध्ययन अत्यधिक व्यापक क्षेत्रों तक विस्तृत होता है। इसका विस्तार विगत समाजों के विश्लेषण से लेकर नवीनतम वैश्विक सामाजिक प्रक्रियाओं की छानबीन तक फैला हुआ है।

समाजशास्त्र क्या है? इसकी परिभाषा देते हुए समाजशास्त्र के जनक ऑगस्ट कॉम्ट ने कहा है कि, "यह एक विज्ञान है और यह मनुष्य की सभी परिघटनाओं का अध्ययन करता है। मनुष्य में बुद्धि होती है। इस बुद्धि के अनुसार ही वह काम करता है, घर बनाता है, परिवार, जाति, धर्म और समुदाय इत्यादि का निर्माण करता है। वह जीविकोपार्जन के लिए व्यवसाय करता है तथा अन्याय के विरुद्ध राजनीति में हिस्सेदार होता है। ये सारे व्यवहार उसकी बुद्धि के कारण होते हैं। ये सब बुद्धि का परिणाम हैं। समाजशास्त्र इन सभी कार्यों का अध्ययन करता है।" इन सभी अध्ययनों में विशिष्ट सैद्धांतिक संदर्भ के कारण समाजशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

अपनी प्रसिद्ध पुस्तक **पॉज़िटिव फिलासॉफी** (Positive Philosophy) में कोम्त ने लिखा है कि, "सामाजिक भौतिकी अर्थात समाजशास्त्र से मेरा तात्पर्य उस विज्ञान से है जो सामाजिक परिघटनाओं का अध्ययन ठीक उसी तरह करता है जिस तरह प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन खगोलशास्त्र, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र और प्राणिशास्त्र में किया जाता है।" उन्होंने यह भी कहा है कि समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करता है। यह विज्ञान सामाजिक परिघटनाओं का सैद्धांतिक अमूर्तिकरण करता है। यह विज्ञान यह जानने की कोशिश करता है कि यह समाज किन-किन नियमों के अंतर्गत बंदरों की अवस्था अथवा आदिम अवस्था से ऊपर उठकर सभ्य अवस्था में पहुँच गया।

कोम्त ने समाजशास्त्र को दो कोटियों में बांटा है। एक सामाजिक स्थैतिकी और दूसरी सामाजिक गतिशीलता। जिस तरह जीव विज्ञान का अध्ययन दो वर्गीकरणों—(1) शरीर रचना, तथा (2) शरीर विज्ञान के माध्यम से आसान हो जाता है ठीक उसी प्रकार समाजशास्त्र का अध्ययन सामाजिक स्थैतिकी और गतिशीलता के माध्यम से आसान हो जाता है।

सामाजिक स्थैतिकी के बारे में कोम्त का कथन है कि सामाजिक संरचना में बुनियादी रूप से परिवार होता है। परिवार ही व्यक्ति और समाज दोनों की संरचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता

है। स्वतंत्र रूप से मनुष्य का कोई महत्व नहीं है। इसलिए समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति न होकर परिवार है। परिवार ही समाज की आधारशिला है। इसी के आस-पास समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म, शिक्षा, व्यवसाय, जाति, वर्ग और राजनीति का अस्तित्व बनता और विकसित होता है। परिवार के कारण ही मनुष्य को सामाजिक बोध हो पाता है। परिवार के बाद उसकी नातेदारी, समुदाय और जाति होती है। इन सबको धर्म और भाषा एक सूत्र में बांधते हैं। मानव समाजों को जोड़ने में भाषा और धर्म की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। भाषा के माध्यम से ही संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचती है। इन सारी चीजों को कोम्त ने स्थैतिक का अंग माना है।

गतिशीलता के बारे में कोम्त ने इसी पुस्तक में लिखा है, ''समाज के सभी अंग गतिशील होते हैं। समाज हमेशा सामान्य से जटिल बनता है और अपनी जटिलता में प्रगति और विकास को और आगे बढ़ाता है। कोम्त ने इस प्रकार समाजशास्त्र को प्रत्यक्षवादी विज्ञान का दर्जा दिया है।''

हालांकि कालांतर में समाजशास्त्र के विकास में लोगों ने कोम्त की भूमिका को कम करके आंका है लेकिन पिछले डेढ़ सौ वर्षों के दौरान हुई प्राय: सभी अवधारणात्मक संरचनाओं और सिद्धांतों में उन्हें ही समाजशास्त्र का जनक कहा जाता है।

समाजशास्त्र अन्य शास्त्रों की तुलना में एक नया शास्त्र है। इसमें अनेक शास्त्रों का समन्वय होता है। राजनीति शास्त्र, नागरिक शास्त्र, संस्कृति, साहित्य, भाषा, मानवशास्त्र इत्यादि के संयोग से समाजशास्त्र का निर्माण होता है। इसकी परिभाषा करते हुए एच.डब्ल्यू. आत्रेय ने कहा है कि, ''समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान समाज विज्ञान कहलाता है।'' जार्ज सिमेल के कथनानुसार, ''समाजशास्त्र मनुष्य के अंत: संबंधों के स्वरूपों का विज्ञान है।'' विचारकों ने समाजशास्त्र को समाज के किसी अंग के अध्ययन का विषय माना है और उसी के अनुसार समाजशास्त्र की परिभाषा देने की चेष्टा की है। लेकिन समाज को चूंकि एक निश्चित परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता इसलिए समाजशास्त्र भी किसी निश्चित परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता। कहना चाहिए जिस समाजशास्त्री का लक्ष्य समाज के जिस विशिष्ट रूप को देखना था उसी के अनुसार वह उसकी परिभाषा भी गढ़ता रहा है।

प्रसिद्ध लेखक और विचारक अंतोनियो ग्राम्शी ने अपने एक पत्र में लिखा है कि ''दुनिया के तमाम लोग जो समाज में काम करने, संघर्ष करने और अपने आपको बेहतर बनाने के लिए इकट्ठे हो गए हैं, उनके बारे में विचार करना किसी भी दूसरी चीज के मुकाबले तुम्हें अधिक खुशी देगा।'' यह पत्र उन्होंने जेल से अपने बेटे देलियो के नाम लिखा था।

तमाम सभ्यताओं और युगों के जिन दार्शनिकों, धर्मगुरुओं और कानूनविदों ने जो कुछ लिखा है उनमें बहुत कुछ ऐसा है जो आधुनिक समाजशास्त्र के लिए आज भी प्रासंगिक माना जाता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र और अरस्तू की पॉलिटिक्स आदि कृतियों में राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण इस प्रकार किया गया है, कि वह आज भी समाजशास्त्रियों के लिए दिलचस्प है और उनकी प्रासंगिकता बनी हुई है। इसके बावजूद उन्नीसवीं शताब्दी में समाज-शास्त्र का स्वतंत्र विकास होना एक अलग और नया नाम भर भी ही नहीं बल्कि समाज के एक नए विज्ञान का अभ्युदय है। इसलिए जिन परिस्थितियों में इसका जन्म हुआ उन परिस्थितियों पर विचार करना और उन विशेषताओं को समझना अधिक मूल्यवान है जिनके कारण समाजशास्त्र शुरुआती सामाजिक चिंतन से अलग है।

समाजशास्त्र के उदय में बौद्धिक और सामाजिक दो परिस्थितियाँ प्रमुख कारण थीं। स्वभावत: ये आपस में जुड़ी हुई हैं और समाजशास्त्र के इतिहास पर प्रकाश डालने के लिए ये ही बुनियादी आधार हैं।

समाजशास्त्र के स्रोत (Sources of Sociology)

समाजशास्त्र के चार प्रमुख स्रोत हैं। चारों इसके विकास में अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं तथा सभी का स्वतंत्र और सम्मिलित रूप है। ये स्रोत इस प्रकार हैं—

1. राजनीतिक दर्शन
2. इतिहास दर्शन
3. जीवविज्ञान का विकास सिद्धांत
4. सामाजिक-राजनीतिक सुधार आंदोलन

राजनीतिक-सामाजिक सुधारों के आंदोलनों को जानने के लिए सामाजिक स्थितियों का सर्वेक्षण अनिवार्य है। शुरुआती दौर में इतिहास दर्शन और सामाजिक सर्वेक्षण विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। इनका उद्भव मनुष्य के बौद्धिक समाज में कुछ देर से हुआ। इसलिए इन दोनों को ही प्रमुख बौद्धिक प्रभाव के तौर पर स्वीकार किया गया। इस प्रकार समाजशास्त्र के निर्माण के बुनियादी स्रोत के तौर पर हम इन दोनों के बारे में विचार करेंगे।

1. इतिहास दर्शन—अनुमान की एक विशेष शाखा के तौर पर इतिहास दर्शन अठारहवीं सदी में सामने आया। इसके संस्थापकों में अबेद-सैं-पियर और जिआमबतिस्ताविको थे। प्रगति के जिस आम विचार को सूत्रबद्ध करने में इन्होंने मदद की, लोगों की इतिहास संबंधी धारणा को गहराई से प्रभावित किया और फ्रांस में मोंतेस्क्यू और वोल्तेयर, जर्मनी में हेर्डेर और अठारहवीं सदी के उत्तरार्द्ध के स्कॉटिश दार्शनिकों और इतिहासकारों के समूह फर्गूसन, मिलर, राबर्टसन इत्यादि के लेखन में यह बात दिखाई पड़ी। यह

नया ऐतिहासिक दृष्टिकोण दुगाल्ड स्टीवार्ट लिखित मेमायर ऑफ ऐडम स्मिथ के इस उद्धरण में साफ तौर पर दिखाई पड़ता है, जिस सामाजिक काल में हम रह रहे हैं, उसकी बौद्धिक उपलब्धियों, अभिमतों, आचारों और संस्थाओं की तुलना जब हम असभ्य जनजातियों के साथ करते हैं, तो इसे एक मजेदार घटना के रूप में देखने से नहीं चूकते कि कैसे अपरिष्कृत किस्म के पहले सीधे-सादे प्रयासों से क्रमशः कदम दर कदम आगे बढ़ते हुए इतने आश्चर्यजनक रूप से विनिर्मित और जटिल चीजों तक आ पहुंचे हैं। स्टीवार्ट और आगे कहता है कि इस प्रगति के कई चरणों के संबंध में कोई सूचना नहीं मिलती और इन खाली जगहों को मानव स्वभाव के ज्ञात सिद्धांतों पर आधारित अनुमान से भरना चाहिए। इस किस्म की दार्शनिक गवेषणा के लिए हमारी भाषा में कोई सही नाम नहीं है, इसलिए इसे सैद्धांतिक या अनुमानिक इतिहास कहने की छूट लूंगा। इस नाम का अर्थ बहुत कुछ मिस्टर ह्यूम द्वारा प्रयुक्त नेचुरल हिस्ट्री, और फ्रांसीसी इतिहासकार जिसे इस्टवार रंजौने कहते हैं उनके साथ मिलता-जुलता है।

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध में हीगेल और सेंट साइमन के लेखन के कारण इतिहास दर्शन एक प्रमुख बौद्धिक प्रभाव बन गया। इन दो चिंतकों का प्रभाव मार्क्स और कोम्त के लेखन पर और फिर आधुनिक समाजशास्त्र की कुछ महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों पर पड़ा। समाजशास्त्र के लिए इतिहास दर्शन के योगदान को संक्षेप में कुछ इस तरह समझा जा सकता है कि दार्शनिक तौर पर ऐतिहासिक कालों और सामाजिक प्रारूपों की धारणाएं इससे आईं। दार्शनिक इतिहासकार ही समाज की नई धारणा के लिए जिम्मेदार हैं। जिनके मुताबिक समाज को राजनीतिक समाज या राज्य के अलावा भी समझा जाता है। वे तमाम किस्म की सामाजिक संस्थाओं पर विचार करते थे, और राज्य तथा जिसे वे 'नागरिक समाज' कहते थे, उसके बीच सावधानीपूर्वक फर्क करते थे। एडम फर्गूसन लिखित 'एस्से ऑन दि हिस्ट्री ऑफ सिविल सोसाइटीज़' (1767) संभवतः इस नजरिए का सर्वोत्तम उदाहरण है; लगता है इसके जर्मन अनुवाद से हीगेल के शुरुआती समाज संबंधी लेखन में उसका दृष्टिकोण प्रभावित रहा और इसी से उसने शब्दावली भी ग्रहण की। फर्गूसन ने इस लेख और बाद के अपने लेखन में समाज के चरित्र, जनसंख्या, परिवार और नातेदारी, पद की विशेषता, संपत्ति, सरकार, रीति-रिवाज, नैतिकता और कानून पर विचार किया है; अर्थात वह समाज को आपस में जुड़ी हुई संस्थाओं की एक व्यवस्था के बतौर समझता है। इसके अलावा वह समाजों के भिन्न-भिन्न प्रकार तय करता है, और सामाजिक विकास के अलग-अलग चरण निर्धारित करता है। इसी तरह की विशेषताएं उन सभी के कई लेखों में मिलती हैं जिन्हें मैंने दार्शनिक इतिहासकार कहा है; इस मामले में

उन सबके बीच अद्‌भुत समानता है और वे मानव समाज के अध्ययन में लोगों की रुचि के क्षेत्र में एक दिशा परिवर्तन के द्योतक हैं। ये विशेषताएं फिर से उन्नीसवीं सदी में शुरुआती समाजशास्त्रियों, कोम्त, मार्क्स और स्पेंसर के लेखन में दिखाई पड़ती हैं।